SHRI RAVULA CHANDRA SEKAR REDDY: Sir, it has been stated that it will take around two to four years for commercial utilisation. I want to know from the hon. Minister, when was the discovery reported and have you entered into any Memorandum of Understanding regarding the sharing of production? If 'yes', what are the details? If not, have you constituted any Expert Committee or Consultative Committee for any advice to the Government of India in this regard? I would also like to know whether you are involving the State Government in the whole process or not.

SHRI RAM NAIK: This discovery was broadly reported in October and November of this year. One of the wells, I must say—some Members also know about it—well No. 4, the depth from water to the ground level is 1,760 metres and the total find is at 3,630 metres down.

So, it is so down that they are going down nearly 3.6 kilometres. That takes time to assess all these things. Based on that, the gas will come out and according to the contract, there is a Committee of Management in which the Director General of Hydrocarbons is there and they decide the manner in which all these actions should be taken in future. The Government has a role, which is being played through the Director General of Hydrocarbons.

Drifting away of small investors in stock market

*105. SHRI SURESH PACHOURI: Will the Minister of FINANCE AND COMPANY AFFAIRS be pleased to state:

(a) whether small investors have drifted away from the stock market recently;

(b) if so, the reasons therefor; and

(c) what decisions have been taken by Government to build confidence of small investors in the stock market?

THE MINISTER OF FINANCE AND COMPANY AFFAIRS (SHRI JASWANT SINGH): (a) to (c) A Statement is placed on the Table of the House.

Statement

(a) No, Sir.

(b) and (c) Several measures have been taken by the Government recently for instilling greater confidence among investors in the stock markets. These *inter-alia*, include repeal of the Unit Trust of India Act, 1963 and amendment of the Securities and Exchange Board of India (SEBI) Act, 1992. In addition, some recent measures initiated by SEBI are: commencement of trading in Government securities on stock exchanges for retail investors; launch of a nationwide Securities Market Awareness Campaign on 17th January, 2003 by the hon'ble Prime Minister; revision of the SEBI (Delisting of Securities) Guidelines, 2003 on 17th February, 03; expansion of the list of derivatives eligible for retail trading and revision of the SEBI (Substantial Acquisition of Shares and Takeovers) Regulations, 1997.

श्री सुरेश पचौरी: आदरणीय सभापति जी, यह सरकार जब से 1998-99 से सत्ता में आई है, उस समय स्टॉक मॉर्केट का इंडेक्स 4,000 था, 2001 में यह 6,000 हुआ, उसके बाद स्कैम हुआ और आज स्थिति यह है कि स्टॉक मॉर्केट का जो इंडेक्स है वह 3,300 हो गया है। महोदय, मैं यह जानना चाहता हूं कि यह सरकार जब-जब उपलब्धियों का जिक्र करती है तो इस सरकार की इस दिशा में उपलब्धि क्या है, इस गिरावट के कारण क्या हैं और मैं ऐसा मान कर चलता हूं कि जब-जब सांप्रदायिक दंगे हुए हैं, लोगों का इन्टरेस्ट इस मॉर्केट में इन्वेस्टमेंट में कम हुआ है, तो क्या गिरावट का यह भी एक कारण है और इसके अलावा अन्य क्या कारण हैं? साथ ही, इस गिरावट को दूर करने के लिए और इसमें सुधार लाने के लिए सरकार की ओर से क्या कदम उठाए जा रहे हैं?

श्री जसवंत सिंह: माननीय सभापति जी, माननीय सदस्य ने एक ही प्रश्न की परिधि में बहुत सारे प्रश्न पूछ लिए हैं। सभी का विश्लेषण करना तो शायद संभव नहीं होगा, परन्तु प्रश्न मूल रूप से अपने आप में स्माल इन्वेस्टर्स और उनकी आस्था मॉर्केट में है या नहीं या वह गिरी है, उससे जुड़ा हुआ था। अब चूंकि माननीय सदस्य ने पूछा है कि बाजार में जो भाव गिरा है उसके कारण क्या हैं, तो यह सही बात है कि यदि मार्केट में कोई बड़ी घटना घटती है तो उससे मार्केट में प्रभाव पड़ता है और मार्केट ऊपर-नीचे होती है। यह यथार्थ है और यथार्थ से कोई परे नहीं जा सकता। परन्तु अभी जो तीन हजार के करीब बाजार में गिरावट आई है, वैसे मैं रोज़ मॉर्केट तो देखता नहीं, लेकिन अब जो आप कह रहे हैं तो वह सही ही होगा।

श्री सुरेश पचौरी: सही है। होगा नहीं, बल्कि है।

श्री जसवंत सिंह: जो इंडेक्स आप बता रहे हैं उसके पीछे कई कारण हैं। अन्तर्राष्ट्रीय कारण भी होते हैं, युद्ध की आशंका भी एक कारण होता है, लेकिन फिर भी दूसरे देशों की मॉर्केट से भारत की मॉर्केट अभी भी स्टेबल चल रही है। जहां तक छोटे इन्वेस्टर्ज़ का कैपिटल मॉर्केट में आने का सवाल है तो इसमें सभापति जी, अगर मुझे इजाजत दी जाए तो मैं थोड़ा समय लेकर समझाना चाहता हूं कि अपने आप में भारत की पद्धति डेट मॉर्केट की ओर सदैव से ज्यादा रही है। स्वाभाविक सांस्कृतिक तौर पर और कैपिटल यह कारपोरेट स्ट्रक्चर में शेयर मॉर्केट की तरफ कम रही है। गांवों में आज भी अगर कोई कंपनी के शेयर खरीदता है तो लोगों का विचार होता है कि स्टोरिया है। तो जो शब्द हमने मॉर्केट के साथ जोड़ा, यह अपने आप में कारपोरेट स्ट्रक्चर में, अगर माननीया सदस्य विचार करें तो भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के बाद आया। ऐसा नहीं है कि भारत में उसके पहले व्यवसाय था ही नहीं या यह व्यापार था ही नहीं, परन्तु वह सब डेट मॉर्केट ओरिएंटेड था और जब इस प्रकार का, शेयर मार्केट कारपोरेट स्ट्रक्चर ओरिएंटेड का जो कल्चर है उसके साथ हम आगे चाहते हैं तो निश्चित रूप से जब ऐसी घटनाएं घटती हैं, तो छोटे इन्वेस्टर की आस्था कम होती है कंपनियों में पैसा लगाने में। जैसा आपको मालूम है वर्ष 1990-91 में शेयर मार्केट में अचानक उछाल आई थी और फिर कई कंपनियां गायब हो गई थीं, शेयर मार्केट में लगाया हुआ पैसा डूब गया। फिर एक और दुर्घटना हुई, फिर पैसा डूब गया। अभी आपने जो कहा, एक नई जेपीसी बैठी। जब ऐसी घटनाएं होती हैं तो निश्चित रूप से इन्वेस्टर का कान्फीडेन्स कम होता है। इसकी एक जांच वर्ष 1999 में कराई गई थी और नेशनल कौंसिल ऑफ एप्लाइड इकानोकिम रिसर्च ने पाया है कि सारे देश में तीन चौथाई नागरिक, 76 परसेंट लोग अपना पैसा बैंक में जमा करा देंगे, पोस्ट-आफिस में जमा करा देंगे, फिक्स डिपोजिट में करा देंगे, परन्तु जहां तक शेयर मार्केट में लगाने का है, वह इसके बनिस्बत कम लगाते हैं। आवश्यकता क्या है कि हमारा कैपिटल मार्केट भी बढ़े, उनका विश्वास बढ़ाया जाए और इसलिए अभी हाल में इसमें थोड़ी प्रगति हुई है। यह क्या संतोषजनक है? पूरी संतोषजनक नहीं है, मैं इसको मानता हूं।

श्री सुरेश पचौरी: माननीय सभापति जी, माननीय मंत्री जी ने विश्वास बढ़ाने की बात कही है। स्थिति यह है पांच साल में स्टॉक मार्केट की स्थिति जस की तस है। जहां तक स्माल इन्वेस्टर की बात है, मान्यवर, जो प्राइमरी मार्केट है, इस बारे में मैं मंत्री महोदय से जानना चाहूंगा कि इस प्राइमरी मार्केट में इम्प्रूवमेंट करने के लिए सरकार द्वारा क्या कदम उठाए जाना प्रस्तावित है? और, सरकार ने क्या कदम उठाए हैं? मंत्री जी ने अपने उत्तर में सेकेंडरी मार्केट को इम्प्रूव करने के लिए उठाए जाने वाले कदमों की जानकारी तो दी है, लेकिन प्राइमरी मार्केट, जहां स्माल इन्वेस्टर जाता है, उसकी जानकारी नहीं है। तो मैं आपके जरिए माननीय मंत्री जी से यह जानना चाहता हूं कि इस प्राइमरी मार्केट को इम्प्रूव करने की दिशा में सरकार द्वारा क्या कदम उठाए गए हैं और क्या कदम उठाए जाएंगे?

श्री जसवंत सिंह: सभापति महोदय, यह स्वाभाविक है क्योंकि जब तक प्राइमरी मार्केट में सुधार नहीं होगा तब तक इन्वेस्टर प्राइमरी मार्केट में क्यों आएगा। यह ठीक बात है। प्राइमरी मार्केट में सुधार के लिए कई कदम उठाए गए हैं, मैं संक्षेप में माननीय सदस्य को वे बता देता हूं। अभी हाल में एक तो सेबी ने प्राइमरी मार्केट में यदि कोई भी कंपनी आती है तो उसके लिए जो एलिजिबिलिटि क्राइटेरिया है उसको बहुत सख्त किया है। यही कारण था कि पहले कंपनियां आईं, उन्होंने मार्केट से पैसा उठाने की कोशिश की और एलिजिबिलिटि क्राइटेरिया ढीला होने के कारण पैसा उठाया, गायब हो गईं। लेकिन, अभी यह एलिजिबिलिटि क्राइटेरिया जो है वह सख्त किया गया है। वैसे पूरा विश्लेषण तो मैं आपको नहीं दे पाऊंगा क्योंकि लंबी बातचीत नहीं करना चाहता, परन्तु अन्य जो बातें हैं प्राइमरी मार्केट की, वह मैं आपको बता दूं। इसी के साथ सेबी ने जो कन्टीन्यूस डिसक्लोजर नार्मस है उनको लागू करने की बात की है। अब जो लिस्टेड कंपनी हैं उनको कंटीनुअस डिसक्लोजर नार्मस के नाते बहुत कुछ मार्केट में करना पड़ता है। अपने आप में यह कंटीन्यूस डिसक्लोजर बहुत स्ट्रिक्ट हैं। तीसरा इनीशियल पब्लिक ऑफर, जिसे आईपीओ कहते हैं, उसका अभी हमने कंपलसरी डीमैटेरियलाइजेशन किया है और जैसा माननीय सदस्य जानते हैं कि पहले वह कागज का टुकड़ा जिसे शेयर कहते हैं उसके साथ क्रेडिट होती थी, अब कंपलसरी डीमैटेरियलाइजेशन से ज्यादा एफीसिएंट हुआ है, उसमें गडबड़ी होने की गुजाइश भी कम है। इसके साथ-साथ जो भी कंपनी पब्लिक या राइट इश्यू ऑडर करती है उसको अपने साथ क्रेडिट रेटिंग देना आवश्यक हो गया है। ये कुछ कदम उठाए गए हैं और मुझे लगता है कि इनसे अभी जो वातावरण है वह पहले से कहीं बेहतर है।

श्री संजय निरुपम: सभापति जी, जो मूल प्रश्न है वह यह है कि लघु निवेशकों का आत्मविश्वास मार्किट में बढ़ाने के लिए क्या किया जा रहा है और इस बारे में मंत्री महोदय ने बताया कि क्या-क्या कदम उठाए गए हैं। मैं जानना चाहता हूं कि क्या मंत्री जी को पता है कि पिछले एक वर्ष में बॉम्बे स्टॉक ऐक्सचेंज, बी॰एस॰ई॰, की ट्रेडिंग लगातार कम होती चली जा रही है जबकि उसकी तुलना में एन॰एस॰ई॰ की ट्रेडिंग बढ़ती चली जा रही है? अगर लघु निवेशकों का कांफिडेंस बढ़ रहा है या लघु निवेशकों का कांफिडेंस बढ़ाने की दिशा में प्रयास किया जा रहा है तो बी॰एस॰ई॰ की ट्रेडिंग बढ़नी चाहिए थी, जबकि यह घटती जा रही है। तो मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि क्या सरकार इस स्थिति से संतुष्ट है? क्या सरकार चाह रही है कि एन॰एस॰ई॰ का मार्किट ही लगातार बढ़े?

श्री जसवंत सिंह: सभापति महोदय, ऐसा नहीं है और न ही सरकार का विचार है कि मात्र एन॰एस॰ई॰ का ही मार्किट बढ़े और बी॰एस॰ई॰ में ट्रेडिंग कम हो। हम मानते हैं कि अपने आप में बी॰एस॰ई॰ भारत का प्रमुख स्टॉक ऐक्सचेंज है, उसकी ट्रेडिंग बढ़ती रहनी चाहिए और इन दोनों स्टॉक ऐक्सचेंज में कोई होड़ नहीं है। अब अगर बॉम्बे स्टॉक ऐक्सचेंज में ट्रेडिंग कम हुई है तो उसके

कई अन्य कारण हो सकते हैं। बी॰एस॰ई॰ की ट्रेडिंग बढ़नी चाहिए, सरकार उसके प्रति कटिबद्ध है।

SHRI PREM CHAND GUPTA: Sir, there is specific question. The basic question is whether small investors have drifted away from the stock market recently. The Government, in its reply, has said, "No".

Sir, this is not the fact. The fact is that we have been facing stock market scams almost every four, five years. In the last stock market scam, almost 20 million small investors lost their lives' earnings.

Sir, the SEBI is considered to be a watchdog, as far as the stock market is concerned. But, the SEBI has not only been sleeping, but they were snoring when the market scam was taking place. They were just closing their eyes. Mr. Chairman, Sir, unless and until certain definite steps are taken, the stock market is not going to improve, because the small investors have burnt their fingers. In the JPC, we dealt with these very issues. I want to know from the hon. Minister: what are the definite steps you are planning to take, so that the investors' confidence is regenerated and recreated in the market? Otherwise, the stock market will not take off. Thank you, Sir.

श्री लालू प्रसाद: सभापति जी, हमारी आर॰जे॰डी॰ में अंग्रेज़ी के जानकार लोग भी हैं।

श्री जसवंत सिंह: सभापति जी, अब स्नोरिंग हो रहा था या स्लीपिंग हो रही थी, वह तो अपने आप में एक मेडिकल पार्ट है, उस पर तो मैं टिप्पणी नहीं करुंगा।

श्री सभापति: लालू जी जब सोते हैं तो स्नोरिंग करते हैं, यह तो इनकी पार्टी के सब लोग जानते हैं।

श्री जसवंत सिंह: परन्तु जो मेरे पास आंकड़े हैं, वे आंकड़े माननीय सदस्य के विचारों से कुछ भिन्न हैं। 8 नवम्बर, 2001 से नवम्बर, 2002 तक जो टर्न ओवर था, वह करीब 66 लाख करोड़ से 77 लाख करोड़ हुआ। दिसम्बर, 2001 से दिसम्बर, 2002 तक 84 लाख करोड़ से 92 लाख करोड़ मार्किट का टर्न ओवर था, मंथ टू मंथ कम्पेरिज़न और जनवरी, 2002 में 1,07,000 करोड़ था और यह टर्न ओवर निरंतर बढ़ता गया है और जनवरी, 2003 में यह 95,660 करोड़ था।.. (व्यवधान).. पहले मैं इस प्रश्न का जवाब दे दूं, फिर आप और प्रश्न पूछिएगा, मैं उसका भी जवाब दूंगा।

SHRI PREM CHAND GUPTA: Sir, this represents a circular turnover. It does not represent small investors' investment in the stock market. It is a circular turnover.

श्री जसवंत सिंह: मैं उसी पर आ रहा था कि अपने आप में जिसे हम स्माल इन्वेस्टर कहते हैं उसकी परिभाषा में है कि जो करीब 20,000 रुपए लगाए, वह स्माल इन्वेस्टर है और जो अधिकृत, लीगल परिभाषा है, उसमें भी 20,000 रुपए है। अब क्या 20,000 रुपए लगाने वालों की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई है? मैं आपको इस बारे में आश्वस्त नहीं कर सकता क्योंकि मैं अभी स्वयं उस बारे में आश्वस्त नहीं हूं। 20,000 रुपए की आमदनी वाला व्यक्ति यदि इन्वैस्ट करना चाहता है तो साधारणतया जैसा मैंने अभी बताया कि वह बैंक में जमा करा देता है या पोस्ट ऑफिस में जमा करा देता है। स्टॉक मार्केट में वह कम कराता है। उसमें और पैसा आना चाहिए, इसके लिए सरकार प्रयत्नशील है।

Commencement of production from explored locations

*106. SHRI MOTILAL VORA:
SHRI SANTOSH BAGRODIA:#

Will the Minister of PETROLEUM AND NATURAL GAS be pleased to state:

(a) the details of new oil and gas explorations both offshore and inland during the last three years;

(b) whether it is a fact that production has not yet begun in the locations explored in the past;

(c) if so, what is the present oil and gas production from these locations; and

(d) if the reply to part (b) above be in the negative, the reasons therefor and by when production is likely to start?

THE MINISTER OF PETROLEUM AND NATURAL GAS (SHRI RAM NAIK): (a) to (d) A Statement is laid on the Table of the House.

Statement

(a) and (b) The details of exploration for hydrocarbons, both onland and offshore, by National Oil Companies (NOCs), Oil and Natural Gas

#Question was actually asked on the floor of the House by Shri Santosh Bagrodia.